इकाई 13 ताइपिंग विद्रोह

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य
13.1 प्रस्तावना
13.2 पृष्ठभूमि
13.3 हंगश्यू चुआन और ईश्वर पूजक संघ
13.4 ताइपिंग विद्रोह का स्वर्ण-काल
13.5 ताइपिंग संगठन और कार्यक्रम
 13.5.1 भू-व्यवस्था
 13.5.2 स्त्रियों की स्थिति
 13.5.3 हस्तशिल्प और व्यापार
13.6 ताइपिंगों का पतन
 13.6.1 जेंग क्यो-फान और चिंग सरकार द्वारा ताइपिंगों को दबाने के प्रयास
 13.6.2 पश्चिमी ताकतों का रवैया
 13.6.3 ताइपिंग आंदोलन की आंतरिक समस्याएं
 13.6.4 ताइपिंगों की पराजय
13.7 ताइपिंग विद्रोह की प्रकृति और प्रभाव
 13.7.1 विद्रोह अथवा सामाजिक क्रांति
 13.7.2 परिणाम
13.8 सारांश
13.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

13.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- ताइपिंग विद्रोह के स्रोत और उसके सामाजिक आधार को समझ सकेंगे,
- ताइपिंग विद्रोहियों के कार्यक्रम और उनकी गतिविधियों का आकलन कर सकेंगे,
- तापिंग विद्रोहियों को पराजित करने के लिए किये गये चिंग सरकार के प्रयासों के विषय में सीख सकेंगे,
- विद्रोह के अंततः विफल होने के कारणों को समझ सकेंगे,
- तापिंग विद्रोह के प्रभाव और इसके समग्र महत्व का आकलन कर सकेंगे।

13.1 प्रस्तावना

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में दक्षिणी और मध्य चीन के अधिकांश हिस्सों में फैलने वाला तापिंग विद्रोह केवल बीसवीं शताब्दी के पहले चीन में होने वाला सबसे बड़ा विद्रोह ही नहीं था, बल्कि विश्व इतिहास के सबसे बड़े किसान विद्रोहों में से भी एक था। यह विद्रोह 13 साल (1851 से 1864) तक चला। अनेक प्रांत और कोई 20 करोड़ लोग इसकी चपेट में आये। इस विद्रोह ने 200 साल पुराने चिंग वंश का खात्मा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उस जमाने में इसका असर इतना जबरदस्त था कि चिंग वंश को पश्चिमी ताकतों के हाथों मिलने वाली मातें, अपनमान और धमकियां भी इसके मुकाबले में बहुत छोटी जान पड़ी। अंततोगत्वा विद्रोह को कुचल दिया गया, लेकिन उस समय तक दो करोड़ से भी अधिक लोग अपनी जान गंवा चुके थे और चीन के कुछ सबसे संपन्न और सबसे अधिक आबादी वाले प्रांत उजाड़ हो चुके थे। तापिंग विद्रोह एक और कारण से भी महत्वपूर्ण था। चीनी इतिहास के एक सबसे घटनापूर्ण दौर में होने वाला यह विद्रोह दो युगों के संक्रमण काल में चला। इसके उद्भव, इसकी विचारधारा, इसके कार्यक्रम और इसकी आंतर्निहित खामियों में चीन की प्राचीन सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक व्यवस्था के भी तत्व थे और निर्माणाधीन नये चीन के भी एक अर्थ में तो, तापिंग विद्रोह पारंपरिक चीनी इतिहास के हो रहे महान् किसान विद्रोहों की शृंखला के अंत का प्रतीक था, और दूसरे अर्थ में यह विद्रोह 19वीं शताब्दी के राष्ट्रवादी, विचारधारा-प्रेरित क्रांतिकारी आंदोलनों का अग्रदूत भी था।

इन तमाम कारणों से, आधुनिक चीनी इतिहास की गति को समझने के लिये तापिंग विद्रोह को समझना आवश्यक है।

इस इकाई की शुरुआत ताइपिंग विद्रोह की पृष्ठभूमि से होती है। इसमें उन विभिन्न कारकों पर चर्चा की गयी है जिनके कारण इतना व्यापक विद्रोह हुआ, इस इकाई में विद्रोह के नेतृत्व के साथ-साथ ताइपिंगों के कार्यक्रम की भी विवेचना की गयी है – विशेषकर उनकी भूमि नीति और महिलाओं के लिये समान अधिकारों की। इकाई में ताइपिंग सेना के कारनामों और उन्हें कुचलने के चिंग सरकार के प्रयासों की भी चर्चा की गई है। पश्चिमी ताकतें प्रारंभ में तो ताइपिंगों के साथ सहानुभूति रखती रही, लेकिन बाद में उन्होंने ताइपिंगों के खिलाफ सशस्त्र हस्तक्षेप किया।

इस इकाई में ताइपिंगों के संघर्ष के विषय में, विद्रोह की खामियों के विषय में और चीन की अर्थव्यवस्था, समाज और राज्यतंत्र पर उसके प्रभाव के विषय में भी चर्चा की गयी है। विद्रोह को लेकर चलने वाली बहस की भी संक्षेप में विवेचना की गयी है।

13.2 पृष्ठभूमि

इतिहासकार ज्यां चेस्वों के शब्दों में "ताइपिंग आंदोलन की तीन प्रकार की विशेषताएं थी: राष्ट्रीय, धार्मिक और सामाजिक" यह विद्रोह इसलिये

- मांचू विरोधी था कि उसने शासक वंश को "विदेशी और बर्बर" बता कर उस पर प्रहार किया,
- धार्मिक था कि उसने कन्फ्यूशियस पंथ पर जबरदस्त प्रहार किया,
- उसने जनप्रिय चीनी पंथों को मिला दिया और ईसाई धर्म से भी कुछ बातें ग्रहण की,
- सामाजिक विरोध का आंदोलन था क्योंकि उसने कृषि-आधारित संबंधों को बदलने के लिये एक कार्यक्रम प्रस्तुत करके चीन में सामंतवाद के महल को हिला कर ही नहीं रख दिया, बल्कि महिलाओं की स्वतंत्रता का भी समर्थन किया।

लेकिन आइए पहले हम उन स्थितियों के महत्व को समझें जिनके कारण कुछ कारक एक दूसरे से जुड़ गये और उन्होंने ऐसी क्रांतिकारी लहर को जन्म दिया।

डेढ़ सौ वर्षों के चिंग शासन के बाद, सामाजिक और आर्थिक संकट और राजनीतिक अव्यवस्था के लक्षण प्रारंभिक 19वीं शताब्दी के चीन में महत्वपूर्ण ढंग से प्रकट होने लग गये थे। बढ़ते किसान असंतोष, प्रशासनिक भ्रष्टाचार और अक्षमता, प्राकृतिक विपदाएं, विद्रोह और विदेशी अतिक्रमण जाने-पहचाने रूप में सामने आने लग गये। इकाई 2 में हमने इन लक्षणों के विषय में कुछ विस्तार से चर्चा की है। यहां हम केवल 1840 के दशक में दक्षिण चीन में विद्यमान उन स्थितियों का वर्णन करेंगे जिन्होंने तापिंग विद्रोह के फैलने के लिए उर्वर भूमि तैयार की। फिर भी, यहां इस बात को ध्यान में रखना होगा कि मांचू विरोधी भावनाएं दक्षिण चीन के लिए नई नहीं थीं। यह बात एक लंबे समय से चले आ रहे किसान विद्रोहों के संबंध में भी सही थी।

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में आम आदमी की जिंदगी को अधिकाधिक कठिन और असुरक्षित बनाने वाली स्थितियां दक्षिण चीन में व्याप्त थीं। इसके अतिरिक्त, अफीम युद्ध और विदेशी उपस्थिति से बनने वाली अवस्वस्था, इस क्षेत्र में विधि जातीय समुदायों की उपस्थिति से बनने वाले तनावों, और गंभीर अराजकता और तानाशाही हिंसा, इन सबने मिलकर दक्षिण चीन की स्थिति को विशेष रूप से विस्फोटक बना दिया। ऐसा विशेषकर क्वांगसी और क्यांगतुग प्रांतों में था।

मांचू शासकों के लिए, नियंत्रण करने की दृष्टि से दक्षिण चीन सबसे दुर्गम प्रदेश रहा। 17वीं शताब्दी के मध्य में चीन पर विजय हासिल करने के बाद पूरी तरह अधीनता में आने वाला यह अंतिम प्रदेश था। मांचू शासन का प्रतिरोध करने वाले अंतिम प्रमुख केन्द्रों की कमर तोड़ देने के बाद भी इस क्षेत्र पर कब्जा हो पाना कठिन बना रहा। इसका आंशिक कारण यह था कि यह क्षेत्र प्रशासन के केन्द्र पीकिंग से काफी दूरी पर था। यह बात क्यांगसी जैसे पहाड़ी अर्ध बंजर या सीमांत क्षेत्रों के संबंध में विशेष रूप से सही थी जिसे 18वीं शताब्दी में ज

ही उपनिवेश बनाया जा सका। वास्तविकता यह थी कि भूमि पर आबादी के दबाव के कारण लोगों को निचली भूमि वाले अपेक्षाकृत अधिक उपजाऊ क्षेत्रों को छोड़कर आना पड़ा था। सामान्य तौर पर, पुलिस और प्रशासन की उपस्थिति ऐसे इलाकों में उन इलाकों की अपेक्षा कहीं कम थी जो कुछ पहले बस गये थे और जिनकी आबादी घनी थी। विभिन्न क्षेत्रों से लोगों के आ जाने के कारण इन नये बसे इलाकों की आबादी कहीं अधिक मिश्रित थी। इसके कारण भी काफी सामाजिक मनमुटाव की स्थिति बनी। सीमांत प्रदेशों में जीवन की कठिन स्थितियों के कारण विभिन्न समुदाय के लोगों में एकजुट होकर आपस में लड़ने वाली भारी हथियारबंद टोलियां बनाने की प्रवृत्ति बनी। इसके कारण **त्येन ती हुई** जैसे गुप्त संगठन उठ खड़े हुए जो इन स्थितियों में खूब पनपे।

क्यांगतुंग और क्यांगसी प्रांतों में सामाजिक तनाव का एक बड़ा कारण हक्का लोगों और मूल वाशिंदों (पेंती) के बीच सदियों से चला आ रहा संघर्ष था। हक्का वह जनसमूह था जो बारहवीं और तेरहवीं शताब्दियों के दौरान इस क्षेत्र में आ बसा था। दक्षिण में कई शताब्दियों से रहते आने के बावजूद उन्होंने अपनी कई विशिष्टताओं, रीति-रिवाजों और अपनी बोली को बरकारार रखा था। उनके और अन्य स्थानीय लोगों के बीच होने वाले संघर्ष अनगिनत और बहुधा हिंसक थे। इस समुदाय की एक विशिष्टता थी उनके आसपास के महौल से उनका अलगाव बोध। ताइपिंग आंदोलन का प्रवर्तक हंग श्यु चुआन, इसी समुदाय की देन था। ताइपिंगों का प्रारंभिक सामाजिक आधार **हक्का** समुदाय में से था।

पश्चिमी व्यापारियों की उपस्थिति ने भी दक्षिण चीन के तटीय भाग और उसके भीतरी भाग में अराजकता की स्थिति के फैलने में योगदान दिया। ऐसा विशेषकर 19वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों से हुआ जब अफीम व्यापार की एक प्रमुख सामग्री बन गई थी। अफीम के अवैध व्यापार ने चोरी छिपे तस्करी और वितरण का एक ऐसा जाल तैयार किया जिसमें हजारों स्थानीय लोग लिप्त हो गए। अफीम युद्ध अपने आप में खुद विशेष रूप से विध्वसंकारी था। अफीम युद्ध और नानकिंग संधि के बाद यह हुआ कि जो व्यापार पहले कैंटन में केंद्रित था वह अब उठकर उत्तर शंघाई में चला गया। कैंटन प्रदेश के ऐसे हजारों कुली मल्लाह और अन्य लोग जो इस धंधे के कारण रोजगार से लगे थे अचानक बेकार हो गये। अपनी रोजी-रोटी कमाने के लिए उन्होंने डकैती को अपना लिया। अंग्रेजी नौ-सेना के समुद्री डकैती उन्मूलन अभियान ने समुद्री डाकुओं को मैदानी भाग में खदेड़ दिया तो उससे भी ऐसे जोखिम पसंदों और आतताइयों की भीड़ बढ़ गई जो कुछ भी कर गुजरने को तैयार थे। यह कम महत्व की बात नहीं है कि हक्का लोगों के अतिरिक्त जो लोग शुरुआत में ताइपिंग आंदोलन से जुड़े वे किसान तबके से इतने नहीं थे जितने विस्थापित फेरी वालों मल्लाहों, कुलियों और ऐसे अन्य लोगों से।

नानकिंग संधि का स्वदेशी दस्तकारी उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा था। उदाहरण के लिए, बाजार में अब विदेशी कपड़े छा गये थे और स्वदेशी सूती कपड़ों का उतना काम नहीं रह गया था। यही हालत दस्तकारी की थी। बहुत सारे दस्तकार बेकार हो गये थे।

चिंग सरकार ने हर्जाना अदा करने की गरज से बहुत सारे कर लाद दिये जिससे किसानों पर बोझ बढ़ गया और कीमतें ऊंची हो गई। उदाहरण के लिए 1846 तक नमक की कीमत कुछ क्षेत्रों में दुगनी से भी अधिक हो गई थी। जमींदार लोग किसानों के शोषण में लगे रहे। अधिकांश भूमि बड़े जमींदारों के हाथों में केंद्रित थी आम आदमी के कष्टों और शासक विरोधी भावनाओं को **त्येन ती हुई** की घोषणा से उस समय अभिव्यक्ति मिली जब यह गुप्त संगठन क्रांति के लिए उठ खड़ा हुआ:

> समूचे साम्राज्य में लोभी अधिकारी लुटेरों से भी बदतर है और सार्वजनिक कार्यालयों के अधिकारी भेड़ियों और बाघों से कुछ बेहतर नहीं है। अमीरों के अपराधों के लिए कोई दंड नहीं दिया जाता और गरीबों के अन्यायों का कोई सुधार नहीं है। अपनी आजीविका के साधनों से वंचित लोग कष्टों की घोर अंधकारपूर्ण गहराई में डूबे हैं।

ताइपिंग विद्रोह के ठीक पहले 1840 के दशक में किसानों या विस्थापित दस्तकारों आदि के नेतृत्व में अनेक विद्रोह हुए। यह संघर्ष निम्न के विरोध में हुए:

- करों की अदायगी
- ऊंचे कर और लगान, और
- भ्रष्ट अधिकारी, इत्यादि

इन विद्रोहों का नेतृत्व त्येन ती हुई जैसे गुप्त संगठनों के कार्यकर्ताओं ने किया। 1840 के दशक के कुछ प्रमुख विद्रोह थे:

- त्येन ती हुई के ले जाई हाओ के नेतृत्व में 1847 में हुनान क्वांगसी सीमा पर हुआ विद्रोह।

- क्यांगतुंग-क्वांगसी सीमाओं और हुनान के क्षेत्रों में 1848-50 के बीच चांग चिया-श्यांग, चेन या-बुआई और ली युआन-फा के नेतृत्व में हुए विद्रोह।

बेशक अधिकारियों ने आम आदमी में उत्पीड़न के खिलाफ व्याप्त असंतोष को मान लेने के बजाय, इन्हें डाकुओं की कारगुजारी ही बताया। सच तो यह था कि डकैती सामाजिक दुखों से ही निकली थी और उसके लिए एक दमनकारी तंत्र के खिलाफ विद्रोह कर देना उचित ठहरने वाला था, उदाहरण के लिए चांग चिया जियांग की निम्न पंक्तियां:

> उच्च वर्गों पर निकलता है हमारा धन
> मध्य वर्गों के लिए आवश्यक है जागरण
> किंतु निम्न वर्ग करें मेरा अनुसरण
> यह बंजर भूमि को जोतने के लिए बैल किराये पर लेने से आगे की बात है।

लेकिन सरकारी भाषा में चांग एक डाकू के सिवा और कुछ नहीं था। इसी पृष्ठभूमि में ताइपिंगों का उदय हुआ।

13.3 हंग श्यू-चुआन और ईश्वर पूजक संघ

ताइपिंग आंदोलन के प्रवर्तक हंग श्यू चुआन (1814-1864) का जन्म हुआ-श्येन (क्वांगतुंग प्रांत) के एक किसान परिवार में हुआ था। कुछ समय तक उसने गांव में अध्यापकी की, लेकिन उसकी महत्वकांक्षा अफसरशाही में आने की थी। उसने 15 साल की अवधि में चार बार प्रथम स्तर की परीक्षा दी लेकिन वह सफल नहीं हो सका, बेशक इन असफलताओं के कारण उसमें व्यवस्था विरोधी भावनाएं बनी होंगी। अपनी दूसरी असफलता के बाद हंग पहली बार कुछ प्रोटेस्टेंट मिशनरियों के संपर्क में आया (यह और बात है कि पहले पहल उस पर इसका कोई बड़ा असर नहीं पड़ा) अपनी तीसरी असफलता के बाद उस पर गहरे विषाद का दौरा पड़ा जिसके दौरान उसे मतिभ्रम (काल्पनिक चीजें दिखाई देना और काल्पनिक आवाजें सुनाई देना) का अनुभव हुआ। इन दोनों घटनाओं ने मिलकर न केवल हंग के जीवन को आकार देने में निर्णायक भूमिका अदा की बल्कि आगे चलकर ताइपिंग आंदोलन बनने वाले विद्रोह पर भी गहरी छाप छोड़ी। हंग को विश्वास था कि उसने मतिभ्रम की अवस्था में कल्पना में जो कुछ देखा वह यह संदेश था कि वह ईश्वर का पुत्र और यीशु ख्रीष्ट का छोटा भाई था, जिसके जीवन का उद्देश्य ईश्वर के वचन को फैलाना और मनुष्य जाति का उद्धार करना था। उसने कन्फ्यूशियस पंथ को सामंतों को धर्म कह कर उस पर प्रहार किया। उसके विचार में शैतान उत्पात कर रहा था क्योंकि कन्फ्यूशियस के सिखाए अधिकांश सिद्धांत अनर्गल हैं। हंग को उसके रूढ़ि विरोधी विश्वासों के कारण 1844 में स्कूल अध्यापकी की नौकरी से निकाल दिया गया। उसके बाद हंग और उसका निष्ठावान मित्र नवधर्मान्तरित फेंगयिन-शान, पड़ोसी प्रांत क्वांगसी में आ गये और वहां उन्होंने अपनी मिशनरी गतिविधियां जारी रखी। कुछ ही वर्षों में उन्होंने हजारों लोगों का धर्मान्तरण कर लिया जिनमें विशेषकर हक्का समुदाय के भट्टी पर काम करने वाले गरीब किसान और खान श्रमिक थे। इन नव धर्मान्तरितों को ईश्वर पूजकों के एक संघ में संगठित किया गया। धर्मान्धता धार्मिक उत्साह और निर्धन समर्थक भावनाओं वाले इस संघ ने चिंग शासन के आधार को ही ललकार दिया।

आगे बढ़ने से पहले इस पर ध्यान देना उचित होगा कि हंग ने अपने क्रांतिकारी विचारों को प्रचारित करने के लिए अनेक लेख और कविताएं लिखीं। इनमें से कुछ हैं:

- उद्धार के सिद्धांत
- विश्व जागरण के सिद्धांत, और
- विश्व उद्बोधन के सिद्धांत।

उसके लेखने के कुछ उदाहरण निम्न हैं:

- सामंतों और एक तंत्र (या तानाशाही) पर प्रहार करते हुए उसने लिखा "स्वर्ग तले सभी का एक ही स्वर्गीय पिता है और इसलिए सब एक परिवार के हैं सम्राट के लिए क्या कारण है कि वह सब कुछ अपने हाथों में हड़प लें?"
- विश्व उद्बोधन के सिद्धांत में उसने अलौकिक तंत्र, अर्थात् नर्क के शैतान राजा से लेकर दुनिया के विभिन्न् राक्षसों (या दानवों) के हाथों लोगों के उत्पीड़न का विरोध किया। ये दानव और कोई नहीं चिंग सम्राट और उसके मातहत थे। लोगों के लिए दुष्टता के इन प्रातों के खिलाफ विद्रोह करना आवश्यक था।
- अपनी एक कविता में हंग ने दानवों को जीतने और गद्दारों का दमन करने का संदेश दिया ताकि शांति कायम हो सके।

यह ठीक-ठीक बता पाना मुश्किल होगा कि कब ईश्वर पूजक संघ एक धार्मिक पंथ से चिंग वंश को खुली चुनौती देने वाला एक आंदोलन बन गया। ईश्वर पूजकों की गतिविधियों और क्वांगसी के सैन्यीकरण के सामान्यतया ऊंचे स्तर ने मिलकर यह सुनिश्चित कर दिया कि बहुत जल्दी उन्हें अपने आपको एक अर्धसैनिक ढंग से संगठित करना था। ईश्वर पूजकों का सैन्यीकरण जुलाई 1850 में उस समय एक नये स्तर पर पहुंच गया जब उसकी तमाम शाखाओं को यह निर्देश दिया गया कि वे सब चिन त्येन में हंग के मुख्यालय पर जमा हों और अपनी तमाम वस्तुओं को एक ही खेमे में जमा कर दें। इस तरह के संगठन का सरकार के लिए खतरा बनना स्वाभाविक था। जल्दी ही, ईश्वर पूजकों की सेना और शाही सेना के बीच सशस्त्र झड़पें हुई, जिनमें अंत में जीत ईश्वर पूजकों की हुई। इससे साहस लेकर ईश्वर पूजकों ने 11 जनवरी 1851 को अपने "महान शांति के स्वर्गीय राज्य" (**ताइपिंग त्येन कुओ**) की औपचारिक घोषणा कर दी, जिसका "स्वर्गीय राजा (त्येन-वांग) खुद श्यू-चुआन था। विद्रोह की शुरुआत हो चुकी थी और उसके बाद हंग और उसके अनुयायियों के लिए मुड़कर देखना नहीं हुआ।

बोध प्रश्न 1

1) पश्चिमी लोगों की उपस्थिति ने दक्षिण चीन के लोगों के दुःखों को किस तरह बढ़ाया? लगभग 10 पंक्तियों में विवेचन करें।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

2) लगभग 10 पंक्तियों में हंग श्यू-चुआन के विचारों का विवेचन करें।

....
....
....
....
....
....
....
....

....

....

13.4 तापिंग विद्रोह का स्वर्ण-काल

शुरुआत में विद्रोहियों और चिंग सेना के बीच इस एक छोटी-सी दिखने वाली झड़प ने जल्दी ही एक व्यापक आंदोलन का रूप ले लिया। यह केवल चिंग सेनाओं को हरा देने या कुछ जमींदारों की छुट्टी कर देने का सवाल नहीं था। क्योंकि तापिंग विद्रोही तो अपने मनों में सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था के पूरी तौर पर पुनर्गठन का एक खाका बना चुके थे। यहां हम ताइपिंगों की विजयों और उन कार्यक्रमों के विषय में चर्चा करेंगे जिन्हें उन्होंने अपने प्रभाव-क्षेत्रों में अपनाया। उन्हें अपने इस अभियान में त्येन ती हुई का और ता-कांग और सु सान-नियांग जैसे उन नेताओं का भी समर्थन मिला जिन्होंने किसी दूसरी जगह विद्रोह किया था। "स्वर्गीय राज्य" की घोषणा के कुछ ही समय बाद, ताइपिंगों ने उत्तर की ओर बढ़ना शुरू किया। जहां-जहां से होकर ताइपिंग बढ़े, वहां-वहां उनके और चिंग सेना के बीच कड़ी भयंकर झड़पें हुईं। इनमें दोनों ही तरफ भारी नुकसान हुआ। लेकिन कुल मिलाकर ताइपिंगों को आगे बढ़ने से नहीं रोका जा सका।

ताइपिंगों की पहली बड़ी विजय यूंगान कस्बे पर उनका कब्जा होना था। वहां उन्होंने अपनी शक्ति बढ़ायी और उनकी सेना में 37,000 सैनिक हो गये। उन्होंने तमाम चीनियों का आह्वान किया कि वे उठ खड़े हों और विदेशी मांचू शासकों का तख्ता पलट दें, उन्होंने एक नये कैलेंडर को भी अपना लिया, जो परंपरा के अनुसार एक नये वंश के सत्ता में आने का चिन्ह होता था। इस तरह उन्होंने यह संकेत दे डाला कि वे ही चीन के आगामी शासक थे। पुराने कैलेंडर में जो शुभ और अशुभ दिनों की अंधविश्वासी धारणाएं थी उन्हें खत्म कर दिया गया।

चिंग सेनाओं ने यूंगान में ताइपिंगों को घेर लिया। ताइपिंगों को इस घेरे को तोड़कर बाहर आने में छह महीने लग गये। यूंगान के बाद तो ताइपिंगों का उत्तर की ओर बढ़ने का सिलसिला जारी रहा और वे हुनान प्रांत की सीमा के अंदर तक पहुंच गये। सामरिक दृष्टि से यह एक बड़ा राजनीतिक और सैनिक कदम था। इसका मतलब यह निकलता था कि तापिंग विद्रोह अब चीनी साम्राज्य के एक दूर-दराज प्रदेश में चलने वाला कोई छोटा-मोटा प्रांतीय आंदोलन नहीं रह गया था। उसने अपनी नजरें मध्य चीन के संपन्न, सांस्कृतिक दृष्टि से विकसित और राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण यांगसी नदी क्षेत्र पर जमा दी थी।

ताइपिंगों के उत्तर की ओर बढ़ने के दौरान उन्हें उपलब्ध बलों और संसाधनों में भी महत्वपूर्ण बढ़ हुई। दक्षिण मध्य चीन की भीषण रूप से शोषित जनता ने ताइपिंगों के समानतावादी सामाजिक संदेश को पूरे उत्साह से अनुकूल प्रतिक्रिया दी। इसका नतीजा यह हुआ कि यांगसी नदी के सहारे स्थित बड़े कस्बों में पहुंचने तक ताइपिंग कार्यकर्ताओं या सैनिकों की संख्या कई लाख हो चुकी थी। उदाहरण के लिए, ताओचो और चेनचों के कोयला खान श्रमिक उनमें आ मिले। उन्होंने अपने इस प्रयास के दौरान राज्य के खजानों से चांदी के भंडार और अनाज और गोला-बारूद और जहाज अपने कब्जे में करके अपने संसाधनों को बढ़ा लिया। इस भारी भंडार को लेकर वे अनेक कस्बों पर कब्जा करते और अपनी संख्या बढ़ाते, आगे बढ़ते रहे। मार्च 1853 में वे चीनी साम्राज्य की पुरानी राजधानी, महान नगर नानकिंग में घुस पड़े और उन्होंने इसका नाम बदल कर त्येनचिंग कर दिया अर्थात् उनके अपने "स्वर्गीय राज्य" की स्वर्गीय राजधानी।

13.5 ताइपिंग संगठन और कार्यक्रम

ताइपिंग आंदोलन के चरित्र में जो संक्रमण हुआ वह सचमुच उल्लेखनीय था। एक विदेशी धर्म अपनाने वालों की एक छोटी-सी टोली से उभरकर वह एक जबरदस्त राजनीतिक सैनिक शक्ति के रूप में सामने आया था जिसका सपना था समूचे चीन को जीतकर पूरी सामाजिक व्यवस्था को नया रूप दे डालना। इसके प्रवर्तकों के मूल मसीहाई सपने और आग्रह ने अब

आंदोलन का मुख्य नेतृत्व प्रारंभ के सबसे महत्वपूर्ण धर्मान्तरितों के हाथों में ही रहा। हग श्यू चुआन "स्वर्गीय राजा" बेशक था, लेकिन सत्ता में उसके साथ दूसरे "राजाओं" (वांग) की भी हिस्सेदारी थी। ये सभी राजा मूल मंडल के अंग थे। कुल मिलाकर पांच राजा थे – उनमें से चार के नाम विभिन्न दिशाओं (पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण) पर थे, जबकि पांचवा राजा "सहायक राजा" कहलाता था।

ताइपिंग अनुयायियों को एक संयुक्त गैर-सैनिक ढांचे में संगठित किया गया था। परिवार इस ढांचे की बुनियादी इकाई थी। परिवार समूहों को ही सेना की टुकड़ियों में संगठित किया गया था। वैसे, ये सैनिक टुकड़ियां केवल लड़ने का ही काम नहीं करती थी, वे भूमि भी जोतती थी और लोक निर्माण का काम भी करती थी। परिवार का प्रत्येक सदस्य अपने ढंग से योगदान करता था। उदाहरण के लिए, बुजुर्ग लोग बांस की कीलें बनाते या खाना बनाते थे और बच्चे व्यस्कों की युद्ध में मदद करते थे। उनके नेता केवल युद्ध में उनका नेतृत्व ही नहीं करते थे बल्कि वे नागरिक प्रशासनिक भी थे जिनपर तमाम आर्थिक प्रशासनिक न्यायिक, सामाजिक और धार्मिक कार्यकलापों की जिम्मेदारी थी।

वैसे तो इस संगठन की बुनियादी इकाई परिवार ही रही, फिर भी ताइपिंगों में जोर इस बात पर रहता था कि तमाम संसाधनों पर स्वामित्व पूरे समुदाय का हो। वे सामुदायिक जीवन पर जोर देते थे। उनमें स्त्री-पुरुषों को अलग-अलग स्थान देने पर भी जोर था। सारी संपत्ति और लोगों के श्रम उत्पादनों को राज्य की संपत्ति (पवित्र राजकोष) माना जाता था और इस बात का प्रयास रहता था कि इस संपत्ति का लाभ प्रत्येक को यथा संभव समान रूप से मिले। ताइपिंगों ने इन तमाम उपायों को उन क्षेत्रों में अपनाने का प्रयास भी किया जिनपर उनकी कहीं मजबूत पकड़ थी। यहां हम ताइपिंग कार्यक्रम के एक-एक ब्योरे का विवेचन नहीं कर रहे। हम तो केवल इससे संबंधित कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं के विषय में ही चर्चा करेंगे।

13.5.1 भूमि व्यवस्था

"स्वर्गीय राज्य" के बुनियादी कार्यक्रम का विवरण "स्वर्गीय राज्य की भूमि व्यवस्था" **(त्येन चाओ त्येन मोऊ ची-तू)** नाम के एक उल्लेखनीय दस्तावेज में दिया हुआ था। इस दस्तावेज में भूमि संबंधी विनियमों के विवरण के अलावा और भी बहुत कुछ था। लेकिन इसका मूल सार यह क्रांतिकारी विचार था कि सारी भूमि पर सभी का मिला-जुला स्वामित्व हो और इसकी पैदावार सभी के उपयोग के लिए हो। इस तरह, ताइपिंगों ने तमाम निजी संपत्ति का खात्मा कर दिया। दरअसल यह सामंती व्यवस्था के खात्मे की घोषणा थी। उन्होंने स्तर के हिसाब से सारी भूमि को नौ श्रेणियों में रखा। 16 वर्ष से अधिक आयु वाले प्रत्येक स्त्री-पुरुष के लिए खेती के वास्ते एक हिस्सा रखा गया। भूमि के वितरण की व्यवस्था इस तरह रखी गयी कि किसी भी परिवार को अच्छी या खराब भूमि गलत अनुपात में न मिले। अर्थात्, ऐसा न हो कि किसी परिवार के हाथ अच्छी ही अच्छी भूमि आये और दूसरे को खराब ही खराब हिस्से मिले। इस तरह व्यक्ति को मिली भूमि उसकी निजी संपत्ति नहीं होती थी। उसका इस्तेमाल केवल पैदावार के लिए होना था। किसी परिवार को मिली भूमि पर अगर उसकी बुनियादी जरूरतों से ज्यादा पैदावार होती थी तो उसे उस अतिरिक्त पैदावार को सामूहिक भंडार में दे देना होता था।

भूमि के सामुदायिक इस्तेमाल का सिद्धांत चीन के लिए नया नहीं था। इसके संकेत प्राचीन ग्रंथ "चोऊ के कर्मकांड" में था। शिन वंश के वांग मांग के शासन की अल्प अवधि (8-23 ई.) में भी मिल जाता है। लेकिन एकाध क्षेत्रों को छोड़कर इस आदर्शवादी कार्यक्रम को और कहीं क्रियान्वित नहीं किया जा सका। कहा नहीं जा सकता कि इसके क्रियान्वित न हो जाने का कारण युद्ध की अनिवार्यताएं रहीं या फिर इसके क्रियान्वित संबंधी कठिनाइयां, फिर भी, हमें यह तो देखने को मिलता है कि ताइपिंगों के प्रभाव वाले क्षेत्रों में जमींदारों की शक्ति आंशिक रूप से खत्म हो गयी थी और कई तो भागकर दूसरे क्षेत्रों में चले गये थे। उदाहरण के लिए, यांगचो में किसानों ने तीन साल तक कोई लगान नहीं दिया, और नानकिंग के आसपास के क्षेत्रों में काश्तकारों ने जमींदारों को लगान देना बंद कर दिया। इसी तरह, और कई क्षेत्रों में लगान आधा तक ही दिया गया।

13.5.2 स्त्रियों की स्थिति

ताइपिंगों की भूमि व्यवस्था की और समूची सामाजिक नीति की भी, एक महत्वपूर्ण विशिष्टता थी स्त्रियों और पुरुषों की समानता का विचार जो कन्फ्यूशियसवादी व्यवस्था के लिए बुनियादी तौर पर अपरिचित था। स्त्रियां ताइपिंगों की सेनाओं का एक अंग थीं और

उनके पास जिम्मेदारी वाले पद भी थे। हंग की बहन खुद महिला सिपाहियों की कमान संभालती थी। जवान लड़कियों और युद्ध में मारे गये लोगों की विधवाओं के लिए न-कुआँन (महिला आवास कक्ष) खोले गये थे।

ताइपिंगों ने कन्याओं के पांव बांध कर रखने की प्रथा और बहुविवाह और वेश्यावृत्ति को समाप्त करने के लिए जो उपाय किये उनसे भी स्त्रियों के प्रति उनके दृष्टिकोण का संकेत मिलता है। एक अंग्रेज मिशनरी डब्ल्यू. ग्यूरहैड ने स्वर्गीय राज्य का दौरा करने के बाद स्त्रियों की बदली स्थिति का इस तरह विवरण दिया:

> ''सड़कों पर चलते हुए, रास्ते में दिखायी पड़ने वाली स्त्रियों की संख्या एक नयी-सी बात है। आमतौर पर वे अच्छी वेश-भूषा वाली, और बहुत सम्माननीय दिखने वाली हैं। अनेक घोड़ों पर सवार हैं, अन्य पैदल चल रही हैं और उनमें से अधिकांश के पांव बड़े हैं। हमारा प्रचार सुनने के लिए कम नहीं ठहरतीं, और उनका व्यवहार हमेशा उचित होता है। पहले की स्थितियों को देखते हुए, यह एक नयी बात है, और इस सबको देखकर आपको अपने यहां की जिंदगी की याद हो आती है।''

ताइपिंग उपर्युक्त प्रथाओं को भ्रष्ट मानते थे, इसलिए उन्होंने उन्हें तो खत्म किया ही, इसके अलावा उन्होंने दासता, जुआ, तंबाकू और शराब के इस्तेमाल और अफीम के धूम्रपान को भी खत्म कर दिया।

13.5.3 हस्तशिल्प और व्यापार

ताइपिंगों ने हस्तशिल्प के कारीगरों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया के वे अपने उत्पादों से संबंधित विशिष्ट कार्यशालाओं में ही काम करें। ये कार्यशालाएं ताइपिंग अधिकारियों की देख-रेख में चलती थीं। फिर भी, सेना की आवश्यकताओं को ध्यान में रखा जाता था और उत्पादों का उपयोग मुख्य तौर पर सेना ही करती थी।

प्रारंभ में व्यापार और वाणिज्य को समाप्त करने के प्रयास किये गये। यह घोषणा की गयी कि:

> सब कुछ स्वर्गीय पिता देता है। पैसों की चीजें खरीदना आवश्यक नहीं है।

लेकिन जल्दी ही यह महसूस कर लिया गया कि यह दृष्टिकोण अयथार्थवादी था। फिर वाणिज्य को केंद्रीय प्राधिकरण के माध्यम से चलाने के प्रयास किये गये। राजधानी के बाहर एक मुक्त बाजार की अनुमति दी गयी जहां समान खरीदा और बेचा जाता था। सौदागरों को अपना व्यापार चलाने के लिए सशुल्क लाइसेंस सेना पड़ता था। चिंग शासित क्षेत्रों की तुलना में ताइपिंगों के अधीन व्यापार पर लगने वाले कर की दर निश्चित रूप से कम थी।

कई तरह से, ताइपिंग आंदोलन ने अपने मूल के महत्वपूर्ण तत्वों को बनाये रखा। इसने अपने गहन धार्मिक चरित्र को कभी नहीं छोड़ा जिसका आधार ईसाई धर्म का एक रूप था (वैसे हंग श्यू-चुआन और आंदोलन के दूसरे नेताओं ने इसकी विलक्षण ढंग से विवेचना की)। ताइपिंग कार्यक्रम के अनेक तत्व भी उस सामुदायिक ढंग की जिंदगी की देन थे जिस ढंग की जिंदगी क्वांगसी के हक्का समुदायों के प्रारंभिक धर्मान्तरित जीते थे।

किसी भी पैमाने से, चाहे हम अपने समय का ही पैमाना क्यूं न लें, ताइपिंगों के कार्यक्रम को सचमुच क्रांतिकारी कहा जा सकता है। वैसे यह आकलन करते समय हमें इस तथ्य को भी ध्यान में रखकर चलना होगा कि ताइपिंग लगातार लड़ते या शत्रुओं से घिरे रहते थे और इसलिए उनके पास अपने उपायों को लागू करने का न तो समय होता था और न ही अवसर। ताइपिंगों ने दो अलग-अलग मानदंड अपनाये — एक नेताओं के लिए, और दूसरा जनता के लिए। फिर भी, ताइपिंगों का यह अत्यधिक आदर्शवादी कार्यक्रम ही था जिसने उन्हें दूसरे किसान आंदोलनों और वंश विरोधी विद्रोहों की तुलना में विशिष्ट बनाया, और इसी ने संभवतः इसके अनुयायियों के धर्मांध उत्साह और निष्ठा को अंत तक प्रेरित किये रखा।

बोध प्रश्न 2

1) लगभग 15 पंक्तियों में ताइपिंगों के भूमि कार्यक्रम का विवेचन करें।

....

....

. . . .

. . . .

. . . .

. . . .

. . . .

. . . .

. . . .

. . . .

. . . .

. . . .

. . . .

. . . .

2) ताइपिंगों का स्त्रियों के प्रति क्या रवैया था? पांच पंक्तियों में उत्तर दें।

. . . .

. . . .

. . . .

. . . .

. . . .

3) निम्नलिखित में से कौन से सही या गलत हैं? √ अथवा × का चिन्ह लगायें।

i) ताइपिंगों ने अपने कलैंडर में शुभ और अशुभ दिनों की धारणा को शामिल किया।
ii) कोयला खान श्रमिकों ने ताइपिंगों का समर्थन किया।
iii) जमींदार ताइपिंगों के सक्रिय समर्थक थे।
iv) ताइपिंगों के अधीन व्यापार पर लगने वाले करों की दर ऊंची थी।
vi) सौदागरों को व्यापार चलाने के लिए सशुल्क लाइसेंस लेना पड़ता था।

13.6 ताईपिंगों का पतन

सन् 1853 में नानकिंग पर ताइपिंगों का कब्जा एक अर्थ में तो इस बात का सूचक था कि ताइपिंग विद्रोह की महत्वकांक्षा कितनी असीम थी। लेकिन, एक और अर्थ में इस विजय ने आंदोलन की सीमा का भी संकेत दे दिया, क्योंकि नानकिंग पर विजय के तुरंत बाद ही ताइपिंग नेताओं ने यह महत्वपूर्ण निर्णय ले डाला कि वे अपनी पूरी शक्ति के साथ पीकिंग की ओर नहीं बढेंगे। उन्होंने निर्णय लिया कि वे नानकिंग और यांगसी नदी क्षेत्र पर अपनी पकड़ को मजबूत करेंगे और पीकिंग में अपनी सेना का केवल एक हिस्सा ही भेजेंगें। उनके इस निर्णय ने ही दरअसल चिंग वंश को बचा लिया। ताइपिंगों के उत्तर की ओर कमजोर अभियान को 1855 के वसंत तक कुचल दिया गया और पीकिंग में चिंग सरकार का व्यवस्था केंद्र और मुख्यालय ज्यों के त्यों बने रह सके। ताइपिंग विद्रोह को पूरी तरह कुचलने में तो और नौ वर्ष लग गये फिर भी यांगसी नदी घाटी "स्वर्गीय राज्य" की धुर उत्तरी सीमा बनी रही। इस तरह, चिंग साम्राज्य का एक बड़ा हिस्सा अछूता बचा रहा।

13.6.1 जेंग क्वो-फान और चिंग सरकार के ताइपिंगों को दबाने के प्रयास

ताइपिंग पर कब्जा कर लेने के बाद ताइपिंगों ने अपने सैनिक प्रयासों को यांगसी नदी के सहारे, पश्चिम में वूचंग से पूर्व में चिनकियांग तक के प्रमुख कस्बों और शहरों पर कब्जा जमाने में लगा दिया। शुरुआत में, चिंग सेना की प्रतिक्रिया पूरी तौर पर बचाव करने की रही। शाही सेनाओं ने नानकिंग के बाहर दो शिविर लगाये, एक यांगसी नदी के उत्तर में

और दूसरा उसके दक्षिण में। लेकिन वे ताइपिंग सैनिकों को नदी के दोनो ओर स्थित संपन्न (प्रशासकीय) प्रांतों को रौंदने से रोक नहीं पाये। गिरे हुए मनोबल और पुराने पड़ गये संगठन वाली शाही सेनाएं ताइपिंगों की अत्यधिक प्रेरित और जेहादी सेना के मुकाबले कहीं नहीं ठहरती थीं।

जब चिंग सरकार को आखिरकार इस सच्चाई का होश आया तो उसने हताशा में कई कदम उठा डाले। जैसे, 1853 में उसने अपने ग्रह प्रांत, हुनान में छुट्टी बिता रहे एक महत्वपूर्ण अधिकारी जिंग क्वो फान को यह निर्देश दिया कि वह वहां उपद्रव कर रहे ताइपिंग विद्रोहियों को ललकारने के वास्ते एक सैन्य बल तैयार करे। जेंग ने निष्ठा (या राजभक्ति) का परिचय देते हुए इस निर्देश का पालन किया, लेकिन इसे क्रियान्वित करने के बारे में उसके अपने अलग विचार थे।

जेंग ने दुश्मनों जैसे ही चुस्त संगठन और प्रतिबद्धता वाली एक सेना का गठन करने का काम शुरू कर दिया। इस सेना को ''मानव सेना'' का नाम दिया गया। उसने बहुत सतर्कता बरतते हुए विद्वान अधिकारियों का चयन सेनापतियों के तौर पर किया। इन सेनापतियों ने फिर स्थानीय किसान वर्ग में से ऐसे सिपाहियों की भर्ती की जो उनके प्रति निष्ठावान रहे। नियमित सेना को सिपाहियों की तुलना में अच्छा वेतन और प्रशिक्षण दिया जाता था। उनमें यह विश्वास कूट-कूट कर भर दिया गया कि वे लूटमार करने वाली ''डाकू'' सेनाओं से अपने गांवों, अपनी जमीनों, अपने मंदिरों और अपनी जिंदगियों की रक्षा कर रहे थे। साथ ही साथ जेंग क्वो-फान ने स्थानीय लोगों के प्रत्येक वर्ग से भी यह सार्वजनिक आग्रह किया कि वे विद्रोहियों को दबाने के अभियान में सहायता करें।

जेंग की सुविचारित और क्रियान्वित रणनीति ने अच्छे परिणाम दिये। शुरुआत में तो, ताइपिंग सैनिकों और नयी हुनान सेना के बीच होने वाली मुठभेड़ ने किसी के भी पक्ष में परिणाम नहीं दिये। लेकिन 1856 के मध्य में नानकिंग के बाहर शिविर डाले नियमित शाही सेनाओं की जबरदस्त हार ने यह सुनिश्चित कर दिया कि इसके बाद जेंग क्वो-फान की नयी सेना के अलावा और कोई भी सेना ताइपिंगों को ललकार नहीं सकती। इस सच्चाई को स्वीकारते हुए, चिंग दरबार ने जेंग क्वो-फान को दिए हुए अधिकारों और जिम्मेदारियों को और बढ़ा दिया। 1860 तक जेंग को शाही आयुक्त का ऊंचा पद और ताइपिंगों के खिलाफ होने वाली तमाम कार्यवाहियों की कमान दे दी गयी थी और इस वर्ष तक उसके पास 120,000 जवानों की एक बढ़िया सेना और योग्य सेनापतियों और रणनीतिज्ञों की कमान थी।

13.6.2 पश्चिमी ताकतों का रवैया

शुरुआत में, संधिगत बंदरगाहों में विद्यमान पश्चिमी ताकतों का रवैया ताइपिंग विद्रोह के प्रति सहानुभूतिपूर्ण था। 1850 के दशक में पश्चिमी ताकतों और चिंग सरकार के बीच तनाव बढ़ा और इन ताकतों के लिए ऐसा कोई आग्रहपूर्ण कारण नहीं था कि वे चिंग सरकार की सुरक्षा के लिए आगे आतीं। इसके अलावा ताइपिंगों का प्रकट रूप में ईसाई धर्म के एक रूप का पालन करना भी इनके पक्ष में जाता था।

लेकिन, अधिकारिक तौर पर पश्चिमी ताकतों विशेषकर अंग्रेजों, का रवैया अटल तटस्थता या रुक कर देखने का था। जब तक पश्चिमी ताकतों के संधिगत अधिकारों, संधिगत बंदरगाहों और वाणिज्य पर कोई आंच नहीं आ रही थी, तब तक उनके पास हस्तक्षेप करने का कोई कारण नहीं था।

लगभग 1860 से इस रवैये में बदलाव आना शुरू हुआ और पश्चिमी लोग ताइपिंगों के अधिकाधिक खिलाफ होते गये। इसके कुछ कारण थे:

i) एक कारण यह था कि यांगसी क्षेत्र में और तट के पास अरसे से चली आ रही अराजकता और हिंसा की स्थिति वाणिज्य के हितों के पक्ष में नहीं थी और विदेशी ताइपिंगों के कब्जे वाले क्षेत्रों में एक स्थिर असरकारी प्रशासन कायम न कर पाने के लिए ताइपिंगों को ही जिम्मेदार मानते थे।

ii) दूसरा कारण था ताइपिंगों का अफीम का विरोध, जिसके पीछे कुछ ही साल पहले अंग्रेजों ने चिंग सरकार से युद्ध लड़ा था।

iii) पश्चिमी लोगों का ताइपिंग छाप ईसाई धर्म से मोह टूटने लगा और उन्हें उसमें कुछ-कुछ कुफ्र भी दिखायी देने लगा।

iv) शायद कहीं अधिक महत्वपूर्ण कारण था पश्चिमी ताकतों और उनकी मांगों के प्रति चिंग सरकार के रवैये में बदलाव जो अपने आपमें चिंग वंश की अंदरूनी दरबारी राजनीति से संबंधित था। 1860 में द्वितीय अफीम युद्ध के बाद संधियों पर हस्ताक्षर के नये दौर के साथ, पश्चिमी ताकतों के लिए चिंग शासन का बना रहना ही हितकारी था, क्योंकि चिंग शासन ही इन संधिगत अधिकारों के बने रहने को सुनिश्चित करने वाला था। फिर भी, पश्चिमी ताकतों को पीकिंग में राजनयिक प्रतिनिधत्व रखने की अनुमति मिल जाने से अब स्थिति यह हो गयी थी कि कुछ प्रमुख पश्चिमी प्रतिनिधि प्रमुख चिंग अधिकारियों से और भी परिचित हो गये थे। वे अब चिंग अधिकारियों में एक ऐसे "नरमपंथी" गुट को भी जान गये थे जो पश्चिम के साथ निकटतर संबंधों के पक्ष में था। पूर्व सम्राट के भाई, राजकुमार कुंग, के नेतृत्व वाले इस गुट के 1861 के बाद, उभरने से पश्चिम के नीतिगत मामले चिंग शासन के प्रति और भी सहानुभूतिपूर्ण हो गये।

पश्चिमी ताकतों की अधिकारिक तटस्थता ने ताइपिंगों के खिलाफ हस्तक्षेप का रूप तभी लिया जब उन्होंने 1860 में शंघाई पर हमला किया। शुरुआत में इसने एक अमेरिकी, एफ.टी. वार्ड की एक निजी सैनिक कमान का रूप धारण किया जिसके लिए वित्त का प्रबंध शंघाई के धनी व्यापारियों की ओर से था। इस सेना की सफलताओं को जल्दी ही सम्राट ने उसे "सदा विजयी सेना" की उपाधि देकर मान्यता प्रदान की। एक अंग्रेज चार्ल्स गॉडर्न, के नेतृत्व में "सदा विजयी सेना" ने जल्दी ही अपनी कार्यवाहियों को केवल शंघाई और उसके आसपास के क्षेत्र की सुरक्षा से बढ़ाकर ली हंग-चांग के नेतृत्व में चीनी सैनिकों के साथ ताइपिंगों के गढ़ों के खिलाफ संयुक्त अभियान तक पहुंचा दिया। लेकिन ताइपिंगों के खिलाफ युद्ध में विदेशियों के इस सीधे हस्तक्षेप से भी महत्वपूर्ण उनका हथियारों की आपूर्ति करना था। इसने ताईपिंगों के खिलाफ चिंग समर्थक सेनाओं को श्रेष्ठता प्रदान करने में एक बड़ी भूमिका निभायी। दरअसल, ली हंग-चांग जैसे अधिकारी कुछ सीमित क्षेत्रों में तो पश्चिमी सहायता लेने के विरुद्ध नहीं थे, लेकिन वे युद्ध में उनकी सीधी भागेदारी के बहुत खिलाफ थे। वे डरते थे कि अगर यूंही रहा तो अंत में पश्चिमी ताकतें चीन के मामलों में और भी आर्थिक हस्तक्षेप करने लग जाएंगी।

13.6.3 ताइपिंग आंदोलन की आंतरिक समस्याएं

सन् 1865 में नानकिंग का घेरा डाले शाही सेनाओं की हार के साथ ताइपिंगों की स्थिति में चढ़ाव भी आया और उसी वर्ष ताइपिंग आंदोलन के अंदर एक बड़ा संकट भी देखने में आया। उसके चोटी के नेताओं के बीच होने वाले दलगत झगड़ों ने इस आंदोलन को ऐसा झटका दिया जिससे वह कभी उबर नहीं पाया।

पूर्व राजा, यांग शिन चिंग, ने कई वर्षों से प्रतिद्वंद्वी राजाओं की कीमत पर अपनी स्थिति ऊंची करने का प्रयास किया था। पूर्व राजा के पास निश्चित सैनिक सामर्थ्य थी और वह आध्यात्मिक मामलों में चतुराई से जोड़तोड़ भी कर लेता था (जैसे, समाधि लगा लेना)। इसी के बूते उसने 1856 तक अपनी स्थिति ऐसी कर ली थी कि हंग श्यू-चुआन के बाद और कोई उसकी बराबरी पर नहीं था।

लेकिन, यांग की महत्वाकांक्षा खुद हंग को हटाकर उसकी जगह लेने की थी। उसने इस दिशा में प्रयास भी शुरू कर दिये। लेकिन हंग ने जल्दी ही उसकी चालों को समझ लिया। हंग ने अन्य दो राजाओं, उत्तर राजा और सहायक राजा, को अपनी रक्षा के लिए बुला लिया (दक्षिण राजा और पश्चिम राजा दोनों पहले के अभियानों में मारे जा चुके थे)। उन्होंने पूर्व राजा को मार डाला और उसके 20,000 से भी अधिक अनुयायियों को भी मौत के घाट उतार दिया। लेकिन, इस प्रक्रिया में वे एक दूसरे के विरोधी हो बैठे। इसका परिणाम यह हुआ कि उत्तर राजा ने सहायक राजा के पूरे परिवार और अनुयायियों की हत्या करवा दी। उत्तर राजा की इन हरकतों से क्षुब्ध होकर हंग ने यांग के मरने के केवल तीन महीनों के बाद उसे भी मरवा दिया। हंग का भी सहायक राजा से विरोध हो गया, जिसके परिणामस्वरूप सहायक राजा बड़ी संख्या में अपने अनुयायियों ने साथ उससे अलग हो गया।

इस सबके अंत में, हंग के अतिरिक्त नेताओं के मूल गुट का कोई भी सदस्य नहीं बचा। हंग ने अपने आपको सरकारी कामकाज से धीरे-धीरे अलग कर लिया। अगर उसका एक अंतिम शेष सहायक प्रयास न करता तो इस बात की पूरी संभावना थी कि ताइपिंगों का आंदोलन जो सात वर्ष और चल गया, न चला होता।

13.6.4 ताइपिंगों की पराजय

खात्मा जेंग क्वो-फान के समग्र निर्देशन में चलने वाले तिहरे आंदोलन पर हुआ। जेंग के भाई को नानकिंग को घेरने का जिम्मा दिया गया। ली हंग-चांग के पास क्यांगसू को शांत करने का जिम्मा था, जबकि एक और सेनापति जो जुंग-तांग को चेक्यांग प्रांत में लड़ने का जिम्मा दिया गया। इसके पहले, ताइपिंगों का पश्चिम की ओर अंतिम बड़ा आक्रमण अभियान 1861 में पिट चुका था।

सन् 1864 तक, चिंग शासन के प्रति निष्ठावान सेनाओं को एक के बाद एक सफलता मिली थी और नानकिंग में छिपे ताइपिंगों की स्थिति कमज़ोर पड़ गई थी। फिर भी, नानकिंग के रक्षकों ने अंतिम व्यक्ति तक लड़ाई लड़ी और एक व्यक्ति ने भी समर्पण नहीं किया। अंत में 19 जुलाई,1864 को जेंग क्वो-फान की सेना ने नानकिंग पर कब्जा किया तो उसमें बहुत खून बहा। जेंग क्वो-फान की सेनाओं ने अपनी जीत में कोई दया नहीं दिखायी। उन्होंने अभियान के अंतिम चरण में ही कई लाख लोगों को मौत के घाट उतार दिया।

एक समय ऐसा था जब यह संभव दिखायी देता था कि ताइपिंग विद्रोह चिंग शासन का तख्ता पलट देंगे और पूरे चीन पर विजय हासिल कर पाएंगे। लेकिन उनका ह्रास और पतन बहुत तेजी से हुआ। ताइपिंग नेताओं के बीज जो भयंकर शत्रुता बनी, उसने आपसी झगड़ों को जन्म दिया। यह निस्संदेह उनकी हार का एक प्रमुख महत्वपूर्ण कारण था। विद्रोह के अंतिम दौर में, ताइपिंगों के पास सच में कोई केंद्र-केंद्रित कमान नहीं रह गयी थी। उनके सबसे प्रतिभाशाली सेनापति और संगठनकर्त्ता भी छिन गये थे जिन्होंने आंदोलन को बहुत नीचे से उठाकर इस स्थिति तक पहुंचाया था।

संयोग ऐसा रहा कि जब ताइपिंगों के नेतृत्व का स्तर गिरने लगा, तभी चिंग सेनाओं के नेतृत्व में मजबूती और पुनर्जागरण आया। जेंग क्वो-फान के नेतृत्व में पुराने और बेअसर सैनिक तंत्र की जगह जो नयी सेनाओं का गठन किया गया, वह ताइपिंगों की हार में निर्णायक बना। इन सेनाओं के नेताओं का चुनाव खुद जेंग ने पूरी सतर्कता के साथ, उनकी प्रतिभा, योग्यता और उसके प्रति उनकी निष्ठा के आधार पर किया था।

ताइपिंग आंदोलन की विफलता का एक और कारण उनकी कथनी और करनी के बीच के कुछ गंभीर अंतर थे। ताइपिंग नेताओं ने अपने अनुयायियों को एक सामुदायिक, सादा और कठोर किस्म की जिंदगी का उपदेश दिया और ऐसी ही जिंदगी उन पर थोपी। लेकिन, विशेषकर अपने आपको नानकिंग में जमा लेने के बाद, उन्होंने खुद इस किस्म की जिंदगी का पालन नहीं किया। इसके विपरीत उन्होंने अत्यधिक दिखावे वाली ऐश की जिंदगी जी।

ताइपिंगों ने अपने आपको चिंग वंश के विदेशी मांचू शासकों के खिलाफ, तमाम चीनियों के नेता के रूप में पेश किया। लेकिन यह राष्ट्रवादी आग्रह उनके धार्मिक उपदेशों और व्यवहारों से मिश्रित था, जो सभी चीनियों को स्वीकार्य नहीं थे। कन्फ्यूशियस पंथ के उनके अस्वीकार और समानतावाद के विचारों ने कुलीनों को उनसे अलग कर दिया और मंदिरों और देवालयों को नष्ट करके उन्होंने निम्न वर्ग के लोगों को भी अपने से अलग कर लिया। गैर-ईसाई धर्मों के प्रति उनके संदेह और असहिष्णुता के कारण उनके लिए उस समय के अनेक गुप्त संगठनों और विद्रोही गुटों के साथ लंबे समय तक सहयोग करना कठिन रहा।

अंत में, शायद चिंग शासन पर तेजी से निर्णायक विजय हासिल करने में कामयाब न होना ही शायद उनके हितों के विरुद्ध गया। पीकिंग तक बढ़ जाने में उनकी नाकामयाबी और नानकिंग के घेरे को उनका जल्दी न तोड़ पाना, ये दोनें ही ऐसी भयंकर सैनिक भूलें थीं जिसने लड़ाई के लंबे खिंचने को सुनिश्चित कर दिया। उससे उस क्षेत्र की सामान्य जिंदगी और आर्थिक गतिविधि नष्ट हो गयी। लोगों ने अव्यवस्था के लिए चिंग शासन को नहीं बल्कि विद्रोही ताइपिंग सैनिकों को दोषी ठहराया। इस बात के भी प्रमाण हैं कि यही मुख्य कारण था जिससे विदेशियों का रवैया निर्णायक तौर पर ताइपिंगों के विरोध में हो गया। जब यह स्पष्ट हो गया कि ताइपिंग एक स्थिर और सुसंगत प्रशासन देने और क्षेत्र में शांति कायम करने की अपनी सामर्थ्य का प्रमाण नहीं दे सकते तो विदेशी व्यापारिक समुदाय विद्रोहियों के खिलाफ हो गया। वैसे यह ताइपिंगों की हार का प्रमुख कारण तो नहीं था, पर यह कारण महत्वहीन भी नहीं था।

बोध प्रश्न 3

1) पश्चिमी ताकतों का ताइपिंगों के प्रति क्या रवैया था? 15 पंक्तियों में उत्तर दें।

....

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

2) चिंग दरबार ने ताइपिंगों को कुचलने के जो प्रयास किए उनका उल्लेख कीजिए। लगभग 10 पंक्तियों में उत्तर दें।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

13.7 ताइपिंग विद्रोह की प्रकृति और प्रभाव

ताइपिंग विद्रोह की प्रकृति और चीन पर इसके प्रभाव को लेकर काफी बहस चलती रही है। यहां हम इन बहसों से संबंधित कुछ बहसों पर विचार करेंगे।

13.7.1 विद्रोह अथवा सामाजिक क्रांति

शाही चीन के लंबे इतिहास में, समय-समय पर व्यापक और जबरदस्त किसान विद्रोह होते रहे। इस अर्थ में, ताइपिंग विद्रोह को ऐसा अंतिम विद्रोह माना जा सकता है।

फिर भी, अनेक अर्थों में, ताइपिंग विद्रोह एक "आम" चीनी किसान विद्रोह नहीं था। यह विद्रोह एक ऐसे क्षेत्र (दक्षिण चीन) में और एक ऐसे समय (मध्य 19वीं शताब्दी) में फैला जब वहां एक बिल्कुल नये प्रकार की स्थिति के प्रभाव को महसूस किया जा रहा था – अर्थात् पश्चिमी ताकतों की उपस्थिति को। इस तथ्य का ताइपिंग विद्रोह पर कई तरीकों से गहरा प्रभाव पड़ा।

सबसे स्पष्ट रूप से, पश्चिम का प्रभाव ताइपिंग विद्रोह की विचारधारा पर इसके प्रवर्तक हंग श्यू-चुआन के धार्मिक विश्वासों के माध्यम से पड़ा। ताइपिंगों की धार्मिक विचारधारा इनके कार्यकलापों में कभी कम महत्वपूर्ण नहीं रहा। बल्कि यह सबसे आगे रहा। यह सही है कि चीनी इतिहास में मिलने वाले कई अन्य किसान विद्रोह कन्फ्यूशियस विरोधी और

समानतावादी तेवलर के थे। लेकिन ताइपिंग नेताओं के ईसाई धार्मिक विश्वासों ने उनके कन्फ्यूशियस विरोधी समानतावादी विचारों को कहीं अधिक तीखा और दुराग्रही बना दिया। किसी और विद्रोह ने तमाम लोगों के भाइचारे और समानता के विचार को भूमि वितरण और सामुदायिक स्वामित्व जैसे ठोस कार्यक्रमों का रूप नहीं दिया था। किसी और विद्रोह ने उस समय की अफीम धूम्रपान, जुआ, वेश्यावृत्ति आदि बुराइयों को मिटाने का बीड़ा इतने जुनून के साथ नहीं उठाया था। यही नहीं, ताइपिंग अपनी दहलीज पर पश्चिमी ताकतों की मौजूदगी के मामले के प्रति भी सचेत थे। उन्होंने आंखें मूंदकर विद्रोहियों का विरोध किये बिना इस मसले का हल निकालने का प्रयास भी किया।

संक्षेप में, ताइपिंग विद्रोह एक शासक घराने को हटाकर दूसरे शासक घराने को स्थापित करने का ध्येय लेकर चलने वाला कोई साधारण परंपरावादी विद्रोह न होकर, एक ऐसा आंदोलन था जिसके पास एक दृष्टि थी, एक सामाजिक संदेश था और एक व्यापक सुधार कार्यक्रम था। यह चीनी इतिहास के एक अनूठे, संक्रमणकालीन दौर की देन था। इस विद्रोह ने कुछ निश्चित सीमाओं में रहते हुए उस युग की समस्याओं का हल ढूंढने का प्रयास किया। ताइपिंग विद्रोह के इसी अनूठेपन के कारण इसे ''क्रांति'' कहा जाने लगा। चीन के साम्यवादी इतिहासकारों ने इसे ''आधुनिक चीन के इतिहास में क्रांति का महान ज्वार भाटा'' कहा है। उनके विचार में ताइपिंग विद्रोह राष्ट्रीय पुनर्निमार्ण और सामाजिक बदलाव के लिए चीनी जनता के शताब्दी लंबे संघर्ष का प्रारंभिक अभियान था जिसने 1949 में आकर चीन की कम्यूनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में चीनी जनता की क्रांति का रूप लिया।

ताइपिंग विद्रोह को शाही चीन के अंतिम वंश विरोधी विद्रोह के रूप में या आधुनिक चीनी इतिहास में मिलने वाले कई क्रांतिकारी विप्लवों की शृंखला के प्रथम विप्लव के रूप में देखना प्रलोभनकारी है। फिर भी, ताइपिंग विद्रोह को उसकी असलियत में देखना शायद अधिक सटीक होगा। यह विद्रोह अपूर्व सामाजिक और आर्थिक संकट में जकड़े एक ऐसे समाज की देन था जिसमें जनता के पास अपने असंतोष और निराशा को व्यक्त करने का इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं था कि वह व्यवस्था के विरोध में हिंसक विद्रोह कर दे।

13.7.2 परिणाम

केवल चीनी साम्यवादियों ही नहीं, बल्कि 20वीं शताब्दी के, डा. सुन यात सेन जैसे, दूसरे दृष्टा और क्रांतिकारियों ने भी ताइपिंगों के राष्ट्रवादी विश्वास, उनके सामाजिक कार्यक्रम और व्यवस्था पर उनके प्रहार से प्रेरणा ग्रहण की। फिर भी, राजभक्त सेनाओं ने ताइपिंगों का सफाया कर दिया तो उस विद्रोह की बस यह याद और प्रेरणा ही बची रह पायी। यहां तक कि कोई ऐसे भूमिगत गुट या धाराएं भी नहीं रहीं जो ताइपिंगों से जुड़ी हों या इसके परवम को थामे हों। 1840 के दशक में उभरकर तेजी से प्रसिद्धि और शक्ति के शिखर पर पहुंच जाने वाला यह आंदोलन कुल मिलाकर 20 साल भी नहीं चल सका। यह अपने आपमें अजीब बात है कि ताइपिंग विद्रोह ने जिस चिंग वंश को खत्म कर देने का लक्ष्य सामने रखा था, उसकी राजनीति पर इस विद्रोह का कोई महत्वपूर्ण असर नहीं पड़ा। चिंग शासकों ने ताइपिंगों के खिलाफ लड़ाई तो जीती, लेकिन उनकी अपनी ताकत इस प्रक्रिया में क्षीण हो गयी। ताइपिंगों को दबाने के लिए जेंग क्वो-फान की जिस हुनान सेना और ली हंग चांग की जिस सेना और जिन अन्य सेनाओं का इस्तेमाल किया गया था वे सत्ता के उन नये केंद्रों के मुख्य आधार बन गये जो पूरी तौर पर चिंग दरबार के आश्रित नहीं थे। विद्रोह को दबाने की हताशा में चिंग शासन ने अपनी चीनी उच्चाधिकारियों को महत्वपूर्ण अधिकार दे डाले, जिससे अतीत में वे सतर्कता से बचते रहे थे। उन्होंने तमाम नियमित सेनाओं पर से अपना एकाधिकारी नियंत्रण छोड़ दिया जिसे 11वीं शताब्दी में सुंग सम्राटों ने हासिल किया था। इन्हें प्रांतीय अधिकारियों और स्थानीय भद्रजनों को कार्य करने की काफी आजादी भी देनी पड़ी। इस सबने मिलकर विद्यमान राजनीतिक ढांचे के अंदर सत्ता के एक निश्चित विचलन या स्थानांतरण की स्थिति बना दी।

जब तक जेंग क्वो-फान जैसे कट्टर भक्तों के हाथों में नेतृत्व रहा, सत्ता में इस विचलन का इस्तेमाल चिंग सम्राटों के शासन को खुले आम चुनौती देने के लिए नहीं किया गया। लेकिन बाद में जाकर इसने उनकी सत्ता और प्रतिष्ठा की बुनियाद में दरार डालने में भूमिका निभायी। यह अपने आपमें महत्वपूर्ण है कि 1911 में चिंग शासन का तख्ता पलटने वाली अंतिम क्रांति में प्रमुख महत्वपूर्ण कारक किसान इतने नहीं थे जितने कि नयी सेनाओं के सिपाही और अधिकारी और स्थानीय भद्रजन।

बोध प्रश्न 4

1) क्या आप ताइपिंग विद्रोह को एक सामाजिक क्रांति मानते हैं? 10 पंक्तियों में उत्तर दें।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

2) ताइपिंग विद्रोह का चिंग शासन पर क्या प्रभाव पड़ा? 10 पंक्तियों में उत्तर दें।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

13.8 सारांश

ताइपिंग विद्रोह मध्य 19वीं शताब्दी में होने वाला एक व्यापक जन-विद्रोह था जिसने चिंग वंश के शासन की बुनियाद को हिला कर रख दिया। चीन के दूर दराज दक्षिण-पश्चिमी कोने में क्वांगसी में ईसाई धर्म के एक रूप का प्रचार करने वाले एक धार्मिक पंथ से शुरू होकर, इसने तेजी से एक जबरदस्त सैनिक शक्ति वाले व्यापक राजनीतिक और सामाजिक आंदोलन का रूप धारण कर लिया। चिंग वंश की कमजोरी और इस समय की अनिश्चित स्थितियों के कारण जनता में अशांति और असंतोष का भाव बना। ऐसा विशेषकर दक्षिण चीन में हुआ।

अपने कार्यक्रम और दृष्टि में ताइपिंग आंदोलन ने एक साहसिकता और निश्चित प्रगतिशीलता दिखायी, जो इसे पहले के किसान विद्रोहों और अन्य समकालीन विद्रोही गुटों से अलग करती थी। लेकिन, इसकी कुछ घातक खामियां भी थीं जिन्होंने इसे पंगु कर दिया। जैसे, इसके शीर्ष नेताओं में फूट और मनोबल का पतन। ताइपिंग विद्रोह के ताबूत में आखिरी कील तब ठुक गयी जब चिंग अधिकारियों को पुरानी व्यवस्था के बचाव में तमाम सेनाओं को जुटा लेने और ताइपिंगों को हराने में समर्थक एक नये सैनिक तंत्र का गठन करने में सफलता मिल गयी।

ताइपिंग विद्रोह कुचल दिया गया और उसका वास्तव में सफाया कर दिया गया। लेकिन इसे दबाने की प्रक्रिया में चिंग वंश को अपनी चीनी अधिकारियों और नयी सेनाओं के सेनापतियों और स्थानीय भद्रजनों को महत्वपूर्ण अधिकार देने पड़े। आगे जाकर, इसी कारण चिंग सत्ता की बुनियाद खोखली पड़ गयी और उसका जल्दी ही पतन हो गया। ताइपिंग विद्रोह एक स्पष्ट याद बन कर रहा और उसने राष्ट्रवादियों और क्रांतिकारियों की आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा-स्रोत का काम किया।

13.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) अपना उत्तर भाग 13.2 के आधार पर लिखें।
2) अपना उत्तर भाग 13.3 के आधार पर लिखें।

बोध प्रश्न 2

1) देखें उपभाग 13.4.1
2) देखें उपभाग 13.4.2
3) i) × ii) √ iii) × iiv) √ v) √

बोध प्रश्न 3

1) अपना उत्तर उपभाग 13.5.2 के आधार पर लिखें।
2) आपको अन्य प्रयासों के अतिरिक्त यूनान सेना की भूमिका का भी विवेचन करना है। देखें उपभाग 13.5.1

बोध प्रश्न 4

1) अपना उत्तर भाग 13.6 के आधार पर लिखें।
2) अपना उत्तर भाग 13.7 के आधार पर लिखें।